भजन

सतगुरु मेरे श्याम श्यामा जी ने, खेल को ऐसा मोड़ दिया
आड़े पट को हटा कर रूहों को, मूल स्वरूप से जोड़ दिया

1–कल तक हमने नासमझी में,साहेबी आपकी न जानी
अब तक पछताते हैं क्यूंकर, हमने करी न कुर्बानी
माया की प्रवाह में बह गई, बेनाम सी जिंदगानी
चरणों में लेकर हमको, मेहर से अपनी तोल दिया

2–प्रेम का रंग दिया हमको,धनी ने खेल में होली खेलन को
मीठा रस दिया वाणी का हमें, प्रेम की बोली बोलन को
अहम् के वस्त्र उतारे न हमने, अखंड सुखों में झीलन को
अवगुण सबके माफ किए, और धाम दरवाजा खोल ददिया

3– हमने देखा सतगुरू जी को, कलकलाते रोते हुए
याद दिलाते रूहों को घर की, अश्कों में भिगोते हुए
पल की देर न की हमने, फिर से माया में सोते हुए
विरहा रूहों को धाम का आ जाये, तन को अपने छोड़ दिया